CBSE Recommended

बादलों के साथ एक दिन

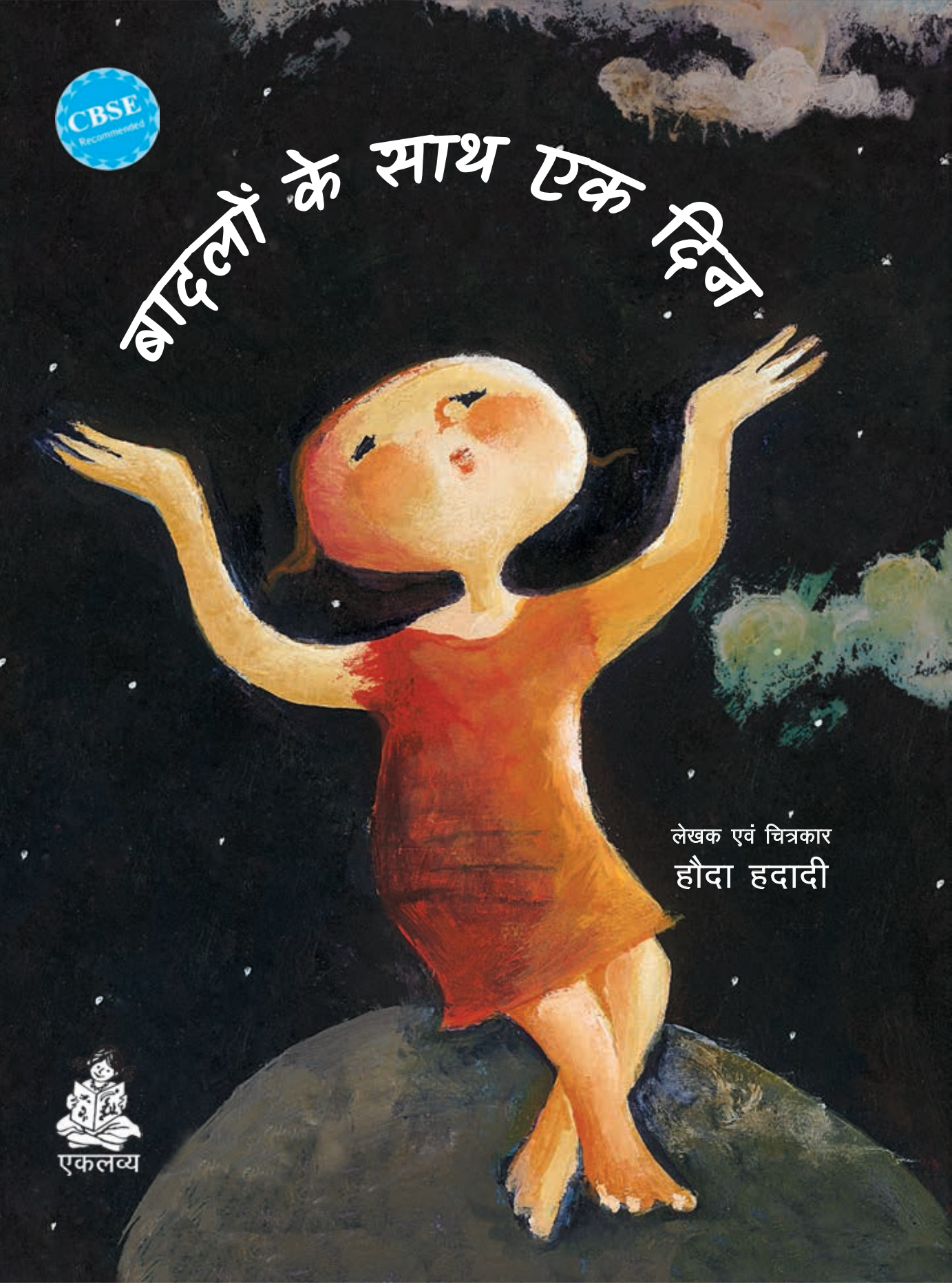

लेखक एवं चित्रकार
हौदा हदादी

एकलव्य

बादलों के साथ एक दिन

लेखक एवं चित्रकार
हौदा हदादी

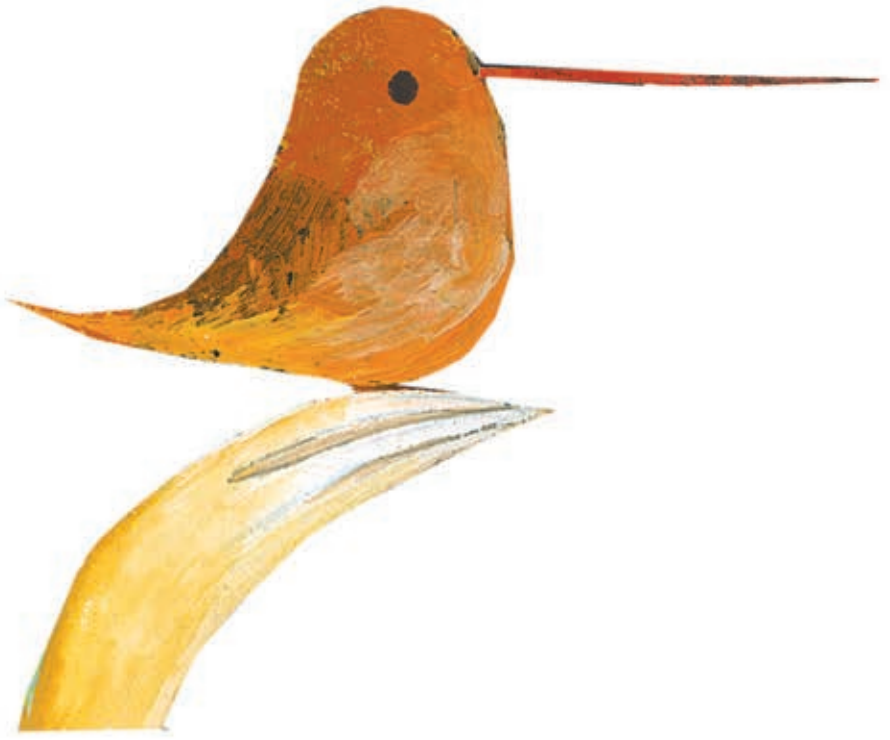

एकलव्य

बादलों के साथ एक दिन
BADLON KE SAATH EK DIN
लेखक एवं चित्रकार: हौदा हदादी
अँग्रेज़ी से अनुवाद: शिवनारायण गौर

Originally in Persian Published by Shabaviz
© Shabaviz, Tehran, Iran
हिन्दी अनुवाद © 2011 एकलव्य

संस्करण: जुलाई 2011 (5000 प्रतियाँ)
पहला पुनर्मुद्रणः जुलाई 2013 (7000 प्रतियाँ)
दूसरा पुनर्मुद्रणः फरवरी 2016 (5000 प्रतियाँ)
तीसरा पुनर्मुद्रणः फरवरी 2018 (5000 प्रतियाँ)
चौथा पुनर्मुद्रणः फरवरी 2021 (3000 प्रतियाँ)
पाँचवाँ पुनर्मुद्रणः मई 2022 (3000 प्रतियाँ)
छठवाँ पुनर्मुद्रणः फरवरी 2024 (3000 प्रतियाँ)
कागज़: 100 gsm मेपलिथो और 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
ISBN: 978-81-906971-2-5
मूल्य: ₹ 60.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर जाटखेड़ी,
भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: बॉक्स कॉरोगेटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोन: +91 755 - 258 7551

अल-सुबह मुझे माऊथ ऑर्गन की आवाज़ सुनाई दी।

मैंने करवट बदली और खिड़की से बाहर झाँका। बाहर का नज़ारा आज कुछ खास था। सारे आसमान में लाल और बैंगनी रंग छाया था। बादल माऊथ ऑर्गन के मधुर संगीत पर झूम रहे थे और एक दूसरे में घुल-मिल रहे थे। जब माऊथ ऑर्गन बजाने वाला चल दिया तो बादल ठहर गए।

मैं बिस्तर से उठी। हाथ-मुँह धोकर रसोई में गई। माँ ने नाश्ता दिया। खिड़की से बाहर देखते हुए वे बोलीं, “अरे वाह कितना सुन्दर आसमान! कितने प्यारे बादल!”

मेज़पोश के फूल खिल उठे। झाड़ू नाचने लगी।

उबलता दूध बरतन से बाहर निकलकर किनारे से झाँकने लगा।

हवा ने देखा कि माँ दूध को भूल गई हैं तो उसने रसोई में आकर ज़ोर से दूध को फूँका। दूध ठण्डा पड़कर बरतन में दुबक गया।

हवा ने माँ के बालों को उड़ा दिया और उनकी बरौनी को भी हिला दिया।

मैंने कहा, “तुम कितनी सुन्दर लग रही हो!”

माँ हँसीं और मुझे दूध दिया पर उन्होंने यह नहीं कहा कि मैं सुन्दर थी या नहीं!

मैंने कहा, “पूरा आसमान बादलों से भर गया है पर बरसात क्यों नहीं होती?”

माँ बोलीं, “बादल बहुत दिनों से नहीं बरसे हैं इसलिए वे बरसना भूल गए हैं।”

मैंने दरवाज़े की घण्टी सुनी। मेरी दोस्त खेलने आई थी।

उसने पूछा, “क्या तुमने बादल देखे?”

मैंने कहा, “बहुत सारे हैं न?”

वह बोली, “पर वे बरसते क्यों नहीं?”
मैंने कहा, “वे बरसना भूल गए हैं।”

माँ हँसीं और बोलीं, “तुम्हें उन्हें बरसना याद दिलाना चाहिए!”

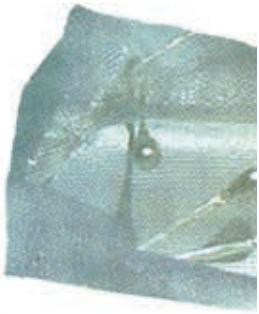

मैं अपनी दोस्त के साथ कमरे में चक्कर लगाने लगी और फिर हम तकिए पर लुढ़क गए।

खेलते-खेलते मैंने माँ से पूछा, “हम बादलों को बरसने की याद कैसे दिलाएँ?”

माँ ने कहा, “उन्हें सत्तर बार बारिश की कविता सुनाओ।”

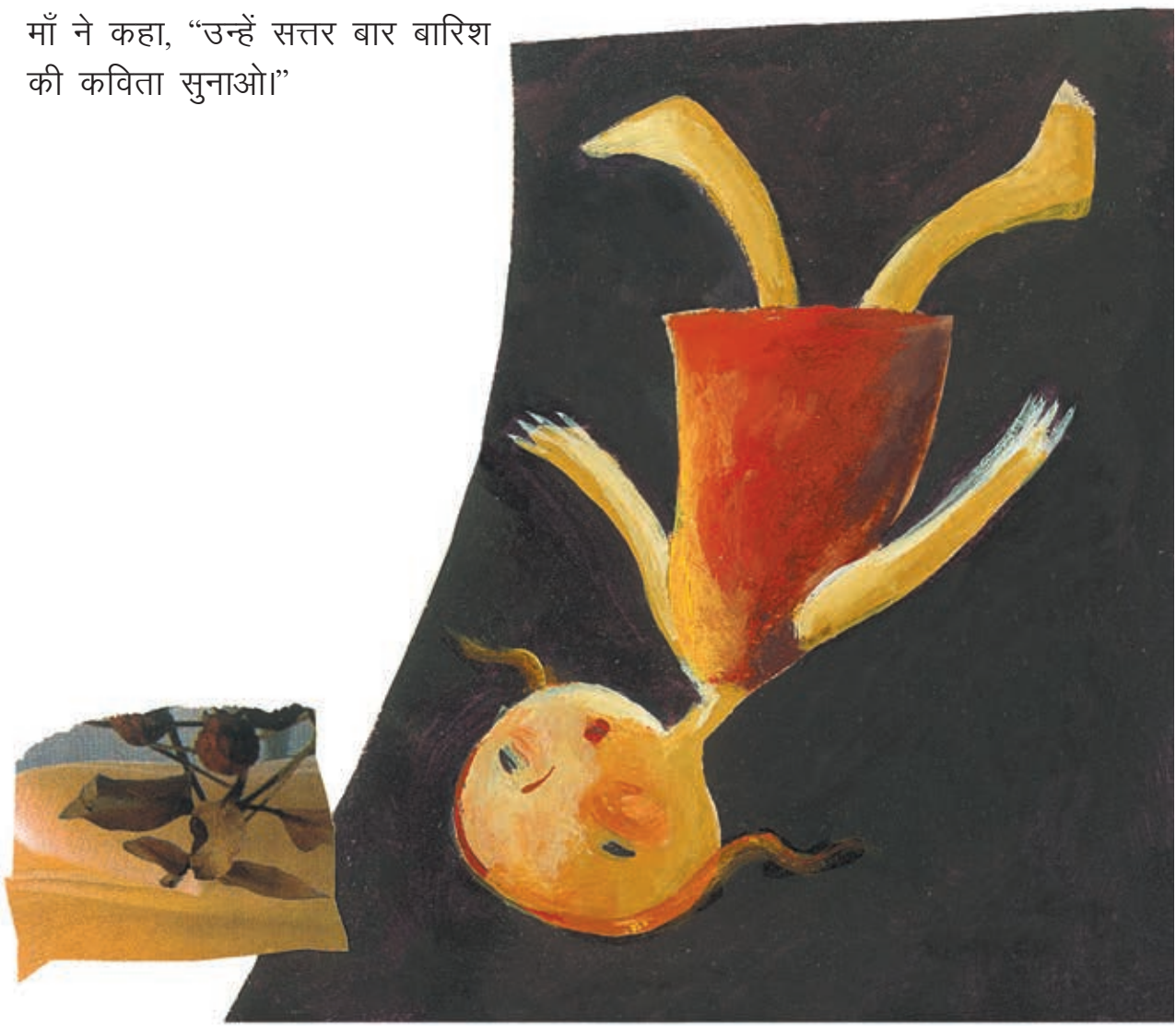

मैंने खुद की और अपनी दोस्त की उँगलियों और अँगूठों को गिना। वे कुल मिलाकर चालीस ही बने। बाकी की गिनती के लिए हम गुड़ियाएँ ले आए। गिनते हुए हमने कविता गाना शुरू किया।

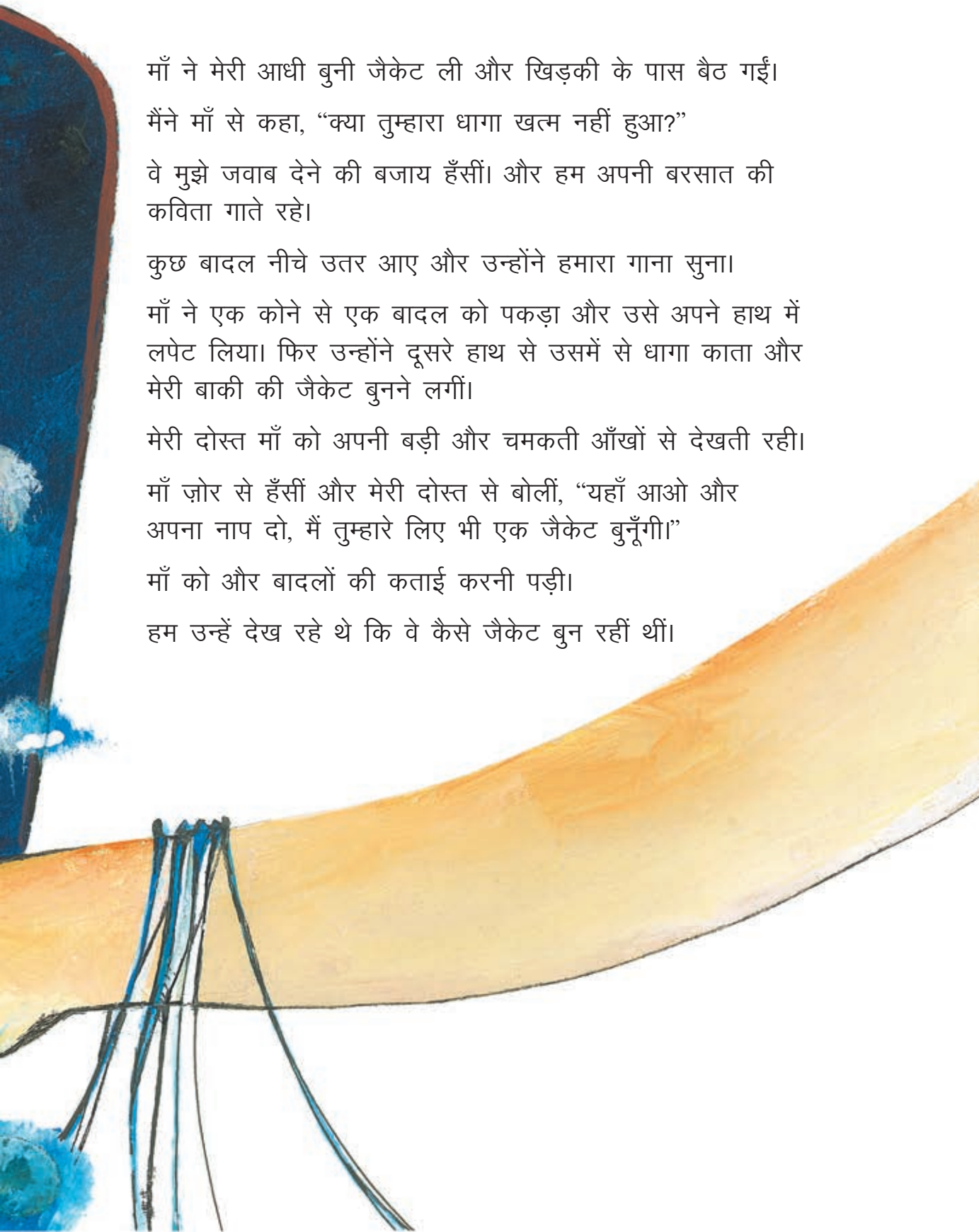

माँ ने मेरी आधी बुनी जैकेट ली और खिड़की के पास बैठ गईं।

मैंने माँ से कहा, “क्या तुम्हारा धागा खत्म नहीं हुआ?”

वे मुझे जवाब देने की बजाय हँसीं। और हम अपनी बरसात की कविता गाते रहे।

कुछ बादल नीचे उतर आए और उन्होंने हमारा गाना सुना।

माँ ने एक कोने से एक बादल को पकड़ा और उसे अपने हाथ में लपेट लिया। फिर उन्होंने दूसरे हाथ से उसमें से धागा काता और मेरी बाकी की जैकेट बुनने लगीं।

मेरी दोस्त माँ को अपनी बड़ी और चमकती आँखों से देखती रही।

माँ ज़ोर से हँसीं और मेरी दोस्त से बोलीं, “यहाँ आओ और अपना नाप दो, मैं तुम्हारे लिए भी एक जैकेट बुनूँगी।”

माँ को और बादलों की कताई करनी पड़ी।

हम उन्हें देख रहे थे कि वे कैसे जैकेट बुन रहीं थीं।

माँ ने कहा, “तुम यहाँ क्यों खड़े हो, जाओ जाकर अपनी कविता गाओ।”

मैंने कहा, “हम थक गए हैं। पर बरसात क्यों नहीं हो रही।”

माँ हमारे लिए सन्तरे लाईं।

मैंने अपनी दोस्त के साथ सन्तरे खाए और हम फिर से खिड़की के पास बैठ गए।

हमने फिर से बरसात की कविता गाना शुरू किया। मैंने अपनी उँगलियों की गिनती पूरी की। मेरी दोस्त ने भी उसकी उँगलियों की गिनती पूरी कर ली। फिर हम अपनी गुड़िया की उँगलियों और अँगूठों को भी गिनते हुए गाते रहे। दस, बीस, तीस बार....

हम कविता ज़ोर से, और ज़ोर से गाते रहे। हमने उसे जल्दी-जल्दी गाया और फर्श पर पैरों से ताल देते रहे। पूरे माहौल को हमने लय और ताल से भर दिया। हमने अपने हाथ उठाए, सिर हिलाया और बादलों को इतना खुश और रोमांचित किया कि वे फिर नाचने लगे। वे नाचते हुए एक-दूसरे में मिलकर झूम उठे। अचानक विचित्र-सी गरज के साथ वे रूई के फाहों की तरह गिरने लगे।

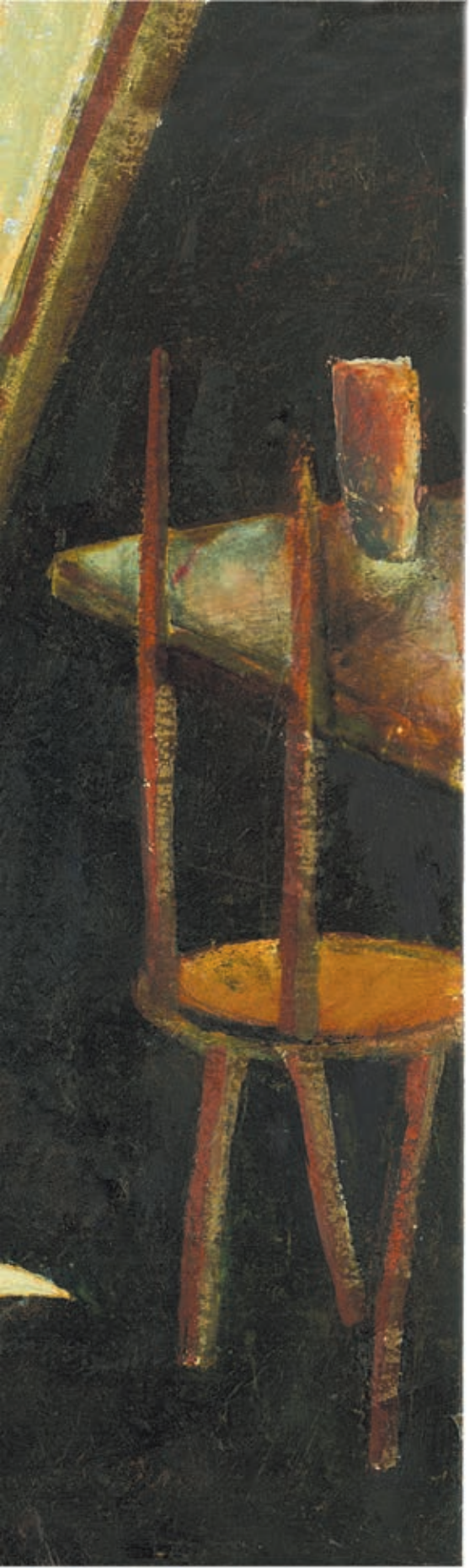

माँ खिड़की के पास आई और मुझे व मेरी दोस्त को गले लगा लिया। हम आश्चर्य से ज़मीन पर गिरती रूई जैसी छोटी-छोटी गेंदों को देख रहे थे। माँ भी अचम्भित होकर बोलीं, “ये बर्फ है!”

पिछले छह साल में कभी बर्फ नहीं गिरी थी।

माँ, मैं और मेरी दोस्त कुछ देर तक खिड़की के पास ही खड़े रहे।

मैंने माँ से पूछा, “क्या हमने बादलों को याद दिलाया?”

माँ बोलीं, “तुम्हारी कविता से आसमान इतना खुश हुआ कि बरसात की बजाय उसने तुम्हारे लिए बर्फ भेजी।”

माँ ने हमें जैकेट पहना दिए। मेरी आधी जैकेट बादलों की बनी थी। उसे पहनकर मैं बहुत हल्का महसूस करने लगी।

माँ हँसीं और बोलीं, "तुम इस जैकेट में कितने सुन्दर लग रहे हो!"

मेरी दोस्त मुझसे भी हल्की थी।

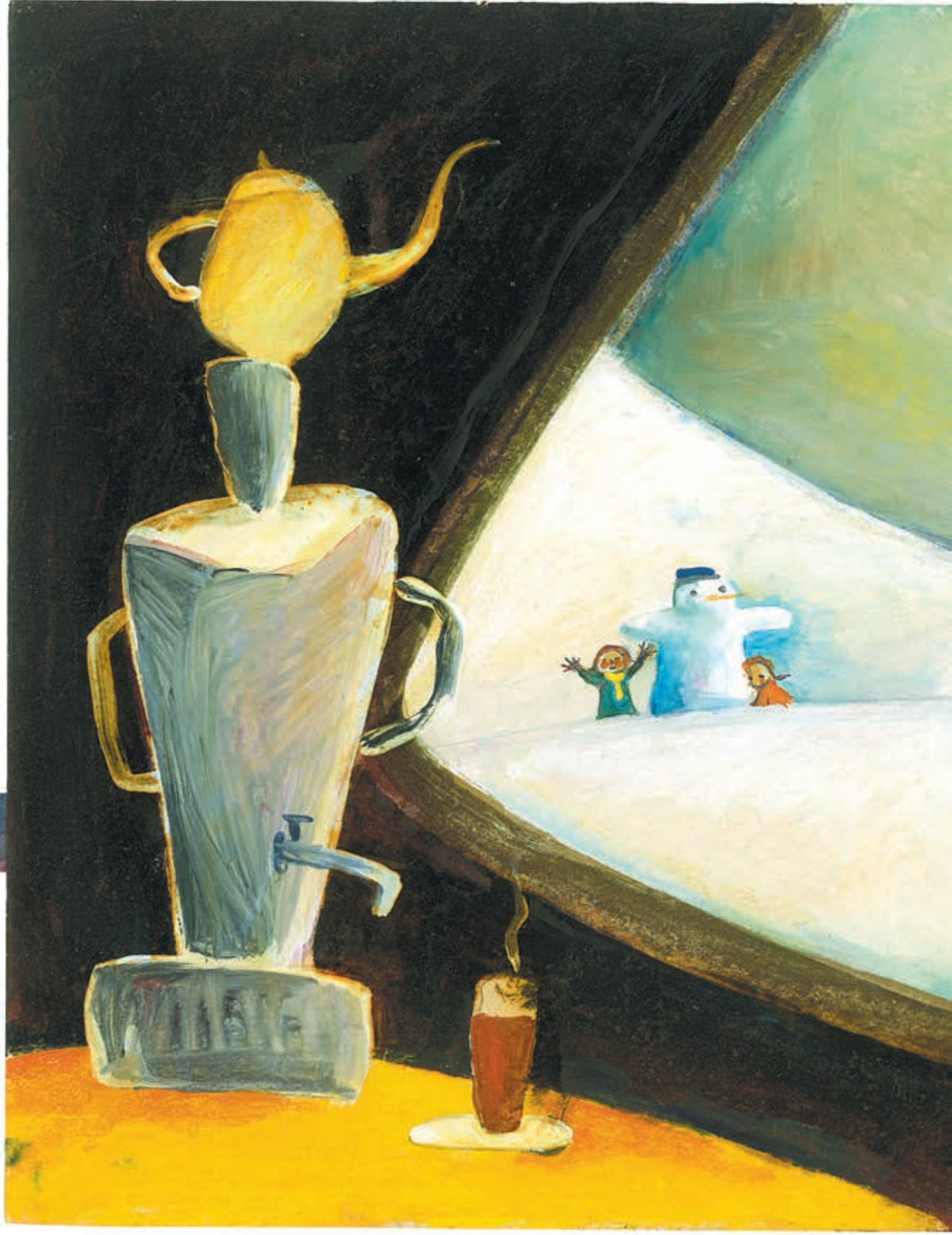

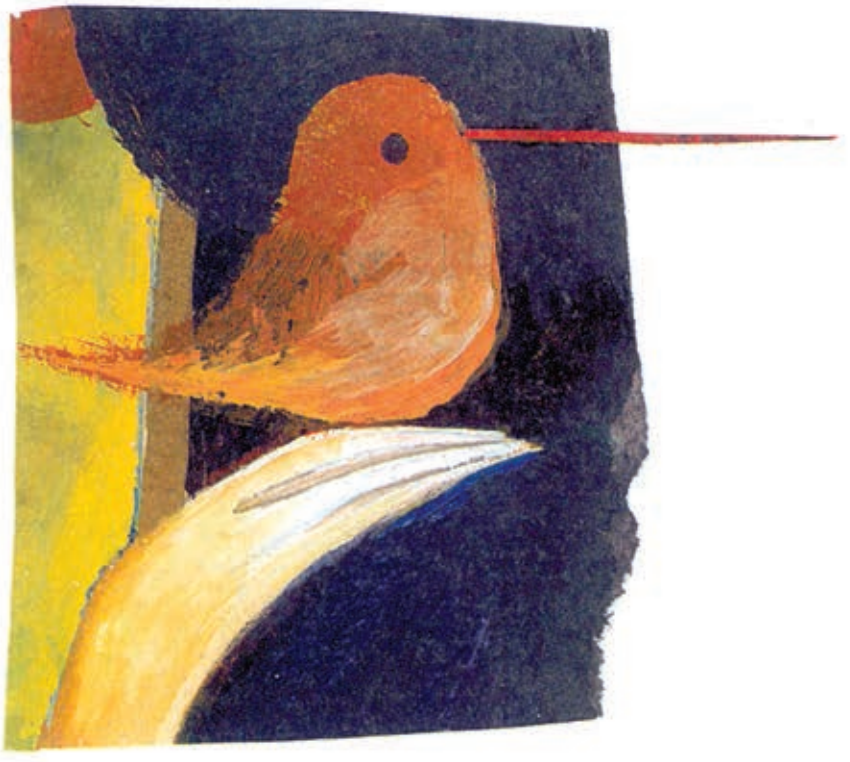

आँगन में खूब सारी बर्फ जमा हो गई थी। हम अपनी गर्म जैकेट पहनकर आँगन में दौड़े और बर्फ के गोले बनाकर खेलने लगे। माँ खिड़की से हमें देख रही थीं और मुस्कुरा रही थीं।

वे भी दौड़ना चाहती थीं, पर वे बहुत दिनों से दौड़ी नहीं थीं इसलिए दौड़ना भूल चुकी थीं।

क्या नज़ारा है? सारे आसमान में लाल और बैंगनी
बादल एक-दूसरे में घुल-मिल रहे हैं, झूम रहे हैं।

पर ये बादल बरसते क्यों नहीं?

parag
AN INITIATIVE OF TATA TRUSTS

एकलव्य

मूल्य: ₹ 60.00

9 788190 697125